इकाई 13 वैश्वीकरण पर वैकल्पिक दृष्टिकोण

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 वैश्वीकरण की समझ

13.2.1 वैश्वीकरण के चरण

13.3 वैश्वीकरणके सैद्धांतिक विवरण

13.3.1 वैश्वीकरणका वास्तविक विवरण

13.3.2 वैश्वीकरणका उदारवादी विवरण

13.3.3 वैश्वीकरणका मार्क्सवादी विवरण

13.3.4 विश्ववादियों के प्रकार

13.4 वैश्वीकरण का आकलन

13.4.1 वैश्वीकरण के प्रतिकूल प्रभाव

13.4.1.1 आर्थिक प्रभाव

13.4.1.2 राजनीतिक प्रभाव

13.4.1.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

13.4.1.4 पर्यावरण असंतुलन

13.5 वैश्वीकरण के विकल्प

13.5.1 सैद्धांतिक दृष्टिकोण

13.5.2 व्यावहारिक विकल्प

13.6 सारांश

13.7 संदर्भ ग्रंथ

13.8 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

यह इकाई वैश्वीकरण, इसके नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों और वैश्वीकरण के विकल्पों पर ध्यान केंद्रित करती है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपनिम्नलिखित में सक्षम हो जाएंगेः

- वैश्वीकरण को परिभाषित करना;
- वैश्वीकरण के विभिन्न सैद्धांतिक पहलुओं पर चर्चा करना; तथा
- वैश्वीकरण के प्रभावों और इसके विकल्पों की आवश्यकता।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

13.1 प्रस्तावना

वैश्वीकरण की अवधारणा कोई नई बात नहीं है। यह लंबे समय से अस्तित्व में है। हालांकि, वर्तमान सहस्राब्दी के मोड़ से यह अधिक सर्वव्यापी हो गया है और लगभग हर चीज पर लागू होता है। 1990 के दशक में प्रिंट मीडिया में इस शब्द की शुरुआत के साथ इसे लोकप्रियता मिली। जैन स्कॉल्ट (2000) के अनुसार यह पहली बार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सामाजिक विज्ञानों में कार्यरत था, लेकिन ध्यान दें कि इसका उपयोग 1960 और 1970 के दशक में तेजी से किया गया था और 1990 के दशक तक न केवल सामाजिक विज्ञान में, बल्कि हर रोज प्रवचन में भी व्यापक हो गया। । इस अवधारणा का सामाजिक विज्ञान सूत्रीकरण और लोकप्रियकरण सिद्धांतकारों के लिए बहुत अधिक है, जिन्होंने 1960 और 70 के दशक में संरक्षणवादी (समाजवादी) अर्थव्यवस्थाओं के कारण आर्थिक स्थिरता और उच्च मुद्रास्फीति का अध्ययन किया थाय और विश्व और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के वैश्वीकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्हें नव–मार्क्सवादी निर्भरता सिद्धांतवादी भी कहा जाता है। कुछ शास्त्रीय नव–मार्क्सवादी निर्भरता सिद्धांतकारों को याद रखना महत्वपूर्ण है जब निर्भरता सिद्धांत पर चर्चा करते हुए पॉल ए. बारन और आंद्रे गौंडर फ्रैंक थे जिन्होंने घरेलू विकास के प्रयासों में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक और शक्ति संबंधों की जांच की थी। वैश्विक आर्थिक आदान–प्रदान पर उनका ध्यान एक व्यापक परिप्रेक्ष्य को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करता है जिसे बाद में इमैनुएल वालरस्टीन (1980) ने अपने 'विश्व प्रणालियों के सिद्धांत' में संवर्धित किया। 15 वीं शताब्दी में यूरोपीय व्यापारिक विस्तार के साथ शुरू हुई एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप समकालीन अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आदान–प्रदान की अवधारणा और 20 वीं शताब्दी तक एक एकात्मक, एकीकृत विश्व पूंजीवादी प्रणाली का निर्माण करके, वालरस्टीन ने एक वैश्विक अपनाने का मार्ग प्रशस्त किया सामाजिक विज्ञान विश्लेषण में परिप्रेक्ष्य।

संचार और मीडिया अध्ययन में समाजशास्त्रियों और विद्वानों ने यह भी माना कि तकनीकी नवाचारों ने आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए दुनिया भर में जानकारी के प्रवाह में तेजी से वृद्धि की है। मार्शल मैकलुहान (1962) ने संचार माध्यमों में नवाचारों को ''वैश्विक गाँव'' बनाया। यह संभावना थी कि वैश्विक गांव में रहने वाले लोग अंततः एक सामान्य, वैश्विक विश्व–दृष्टिकोण साझा करेंगे जो पहचानों को फिर से खोल देगा। यह भी संभावना थी कि एक नया, महानगरीय, वैश्विक नागरिक, सभी मानव जाति की एकता की वैश्विक चेतना के साथ अंततः उभरेगा (रॉबर्टसन, 1992)।

वैश्वीकरण की आधुनिक अवधारणा की लोकप्रियता मुख्य रूप से विकसित (पूंजीवादी) देशों की आर्थिक और सामाजिक उपलब्धियों के कारण थी, जो विश्व बाजार के लिए अपनी शर्तों को निर्धारित करते थे। वैश्वीकरण के इस बढ़े हुए युग के दौरान, सामान्य रूप से दुनिया और विशेष रूप से तीसरी दुनिया में, हालांकि, बहुआयामी सामाजिक और पर्यावरणीय खतरों को भी देखा, जोवैश्वीकरण के विकल्प '(कुरियन, 2007) को दर्शाता है। विद्वानों ने वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन किया चाहे वह नकारात्मक हो या सकारात्मक। कई लोगों ने आर्थिक वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों पर जोर दिया है और अधिकांश इस तर्क से सहमत हैं (और मानते हैं) कि वैश्वीकरण का मानव कल्याण और सामाजिक न्याय के लिए विनाशकारी परिणाम हैं। उन्होंने विभिन्न देशों विशेष रूप से तीसरी दुनिया के देशों में रोजगार और मजदूरी पर वैश्वीकरण के

नकारात्मक प्रभावों को उजागर किया है, असमानताओं की ऊँचाई, लिंग और जातीय उत्पीड़न में वृद्धि और अप्रवासियों के खिलाफ भेदभाव, सामाजिक व्यय और कार्यक्रमों में छंटनी, सरकारों और उनके बारे में जानकारी घरेलू अर्थव्यवस्था की रक्षा करने में असमर्थता, प्रबंधकीयता का प्रसार और सामाजिक नीति में एक नया वर्कफेयर एथिक जो पहले के सामूहिक समाज कल्याण के आदर्शों (मिडगली, 2007) की सार्वभौमिकता को निरस्त करता है।

13.2 वैश्वीकरण की समझ

वैश्वीकरण शब्द का उपयोग कई तरीकों से किया जाता है, उदाहरण के लिए घटना का एक सेट का वर्णन करने के लिए – दुनिया भर में धन का हस्तांतरण, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, अंतर्राष्ट्रीय उत्पादन, पर्यटन में वृद्धि और राष्ट्र–राज्यों की गिरावट। यह एक प्रवचन के रूप में भी प्रयोग किया जाता है जिसमें वैश्वीकरण की स्वीकृति अपरिहार्य, अपरिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय होने के रूप में सामने रखी गई है। जैसे कि वैश्वीकरण मानव एजेंसी के नियंत्रण के बाहर एक प्रकार की प्राकृतिक प्रक्रिया बन जाता है। एंथनी गिडेंस (1990) ने वैश्वीकरण को ''दुनिया भर के सामाजिक संबंधों का गहनता'' के रूप में वर्णित किया है जो दूर के इलाकों को इस तरह से जोड़ता है कि स्थानीय घटनाओं को कई मील दूर और इसके विपरीत होने वाली घटनाओं द्वारा आकार दिया जाता है। जैन आर्ट स्कॉल्ट (2005) के अनुसार, ''वैश्वीकरण उन विकासों का एक समूह है जो दुनिया को दुनिया के मामलों में दूरी और राष्ट्रीय पहचान के महत्व का अर्थ बदलने वाली एकल जगह बनाता है''। डेविड हेल्ड और एंथोनी मैकग्रे (2002) ने वैश्वीकरण को बढ़ती दुनिया के अंतर्संबंध के रूप में परिभाषित किया है, यह विस्तार के पैमाने, बढ़ते परिमाण, तेजी और अंतर–क्षेत्रीय प्रवाह और सामाजिक संपर्क के पैटर्न के प्रभाव को गहरा करता है। यह मानव सामाजिक संगठन के पैमाने में बदलाव या परिवर्तन को संदर्भित करता है जो दूर के समुदायों को जोड़ता है और दुनिया के प्रमुख क्षेत्रों और महाद्वीपों में शक्ति संबंधों की पहुंच का विस्तार करता है। वैश्वीकरण को दुनिया के संपीड़न और पूरे विश्व में चेतना की गहनता के रूप में भी परिभाषित किया गया है (रॉबर्टसन, 1992)।

परिभाषाओं का यह छोटा सा नमूना यह महसूस करने के लिए पर्याप्त है कि वैश्वीकरण कई प्रभावों के साथ एक जटिल घटना है जो एक ही परिभाषा में अपने सभी पहलुओं को कवर करना मुश्किल बनाता है। वास्तव में, इसके पास आने के तीन संभावित तरीके हैं। सबसे पहले, इसे आधुनिक परिवहन और संचार साधनों द्वारा सुलभ वस्तुओं और उत्पादन कारकों के वैश्विक प्रवाह के तेज के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वैश्वीकरण को समय और स्थान के एक संपीड़न के रूप में भी देखा जा सकता है कि दुनिया के एक हिस्से में घटनाओं का दूर के स्थानों पर तात्कालिक प्रभाव पड़ता है। तीसरा दृष्टिकोण वैश्वीकरण को भौतिक शक्ति की ऐतिहासिक संरचना के रूप में समझना है। वैश्वीकरण अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति में ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है (मित्तलमैन, 2006)। इसलिए, वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है और इसे एक बहु–आयामी घटना के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसमें भौगोलिक तराजू के एक दायरे में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों की पूरी विविधता के बीच अत्यधिक जटिल बातचीत शामिल है।

13.3 वैश्वीकरण के चरण

थॉमस फ्राइडमैन (2005) ने वैश्वीकरण के तीन चरण की विशेषता बताई है। पहला चरण 1492 से 1800 तक है, जो व्यापारीवाद और उपनिवेशवाद की उम्र थी। दूसरा चरण 1800 से मध्य बीसवीं शताब्दी तक द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक था। यह अवधि पैक्स–ब्रिटानिका की उम्र में हावी थी – दुनिया भर में उपनिवेशीकरण के एक नए रूप से निर्मित। अंत में, 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान दुनिया अपने आकार से छोटे और चापलूसी वाले खेल के मैदान से सिकुड़ने लगी, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका ने वैश्वीकरण महाद्वीपों के एक नए मॉडल (कुमार, रिमी और गुप्ता, 2017) को फिर से मजबूत और लोकप्रिय बनाया। 1945 में संयुक्त राष्ट्र संगठन की स्थापना और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), विश्व बैंक, टैरिफ और व्यापार (जीएटीटी) पर सामान्य समझौते और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की तरह आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों पर समझौते ने नए युग के लिए जमीन प्रदान की है वैश्वीकरण का। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन, क्रॉस–बाउंड्री वाटर इश्यू, वायु प्रदूषण और महासागरों में मछली पकड़ने के अधिक दोहन जैसी पर्यावरणीय चुनौतियाँ वैश्वीकरण से जुड़ी हुई हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रियाएं व्यवसाय और कार्य संगठन, अर्थशास्त्र, सामाजिक–सांस्कृतिक संसाधनों और प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होती हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास।

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के अर्थ और उसके आयामों का संक्षिप्त पर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 वैश्वीकरण के सैद्धांतिक विवरण

भूमंडलीकरण पर तीन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर यथार्थवादी, उदारवादी और मार्क्सवादी विचारों के तहत विद्वानों द्वारा बहस की जाती है।

13.3.1 वैश्वीकरण का वास्तविक विवरण

रियलिस्टों के लिए, विश्व मंच पर मुख्य कलाकार संप्रभु राज्य हैं। वैश्वीकरण के यथार्थवादी स्पष्टीकरण शक्ति के सापेक्ष वितरण पर जोर देते हैं। यथार्थवादी के लिए, वैश्वीकरण वर्चस्व के लिए महान शक्तियों के संघर्ष का प्रतिबिंब है। नतीजतन, वैश्वीकरण, आधिपत्य के लिए संघर्ष का एक और संदर्भ है। यथार्थवादी दो मूल मान्यताओं पर भरोसा करते हैं जो वैश्वीकरण पर उनके दृष्टिकोण को आकार देते हैं। पहला, वे राज्य को अंतरराष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में रखते हैं। दूसरे, वे 'उच्च

राजनीति' को 'कम राजनीति' से अधिक प्राथमिकता देते हैं, यानी अंतर–राज्यीय संवादों में सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर राजनीतिक और सैन्य मुद्दों का प्रसार। इस प्रकार, वैश्वीकरण को मुख्य रूप से एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो अंतर–राज्य संबंधों के संदर्भ को बदल देता है। प्रभाव राजनीतिक स्तर पर देखे जाते हैं भले ही परिवर्तनों की प्रकृति मुख्यतः आर्थिक हो (कुमार, रिमी और गुप्ता, 2017)। यथार्थवादी का तर्क है कि वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि विश्व उत्पादन की बदलती संरचना ने दुनिया की राजनीतिक अर्थव्यवस्था से अलग होने के लिए अवसर लागत में काफी वृद्धि की है।

13.3.2 वैश्वीकरण का उदारवादी विवरण

उदारवादियों के लिए, वैश्वीकरण को विश्व राजनीति के लंबे समय से चल रहे परिवर्तन के अंतिम उत्पाद के रूप में देखा जाता है। उदारवादियों को विशेष रूप से प्रौद्योगिकी और संचार में वैश्वीकरण द्वारा प्रतिनिधित्व क्रांति में रुचि है। इसने आर्थिक और तकनीकी रूप से आगे बढ़ने वाले समाजों के बीच परस्पर जुड़ाव को बढ़ा दिया, जिसके परिणामस्वरूप विश्व राजनीतिक संबंधों का एक बहुत ही अलग स्वरूप सामने आया। उदारवादियों का मानना है कि वैश्वीकरण सामाजिक और राजनीतिक लाभ लाता है। दुनिया भर में सूचना और विचारों का मुक्त प्रवाह व्यक्तिगत विकास के अवसरों को बढ़ाता है और अधिक गतिशीलता और जोरदार समाज बनाता है। उदारवादियों के लिए, वैश्वीकरण राष्ट्र राज्यों के अंत को चिह्नित करता है जो अन्यथा प्रमुख वैश्विक अभिनेता हैं। राज्यों के पास अब सील की गई इकाइयाँ नहीं हैं और इसके परिणामस्वरूप दुनिया संबंधों के सिलसिले के समान है। उदारवादियों का यह भी तर्क है कि वैश्वीकरण अनिवार्य रूप से वैश्विक राजनीतिक पहचान के प्रसार और फिर वैश्विक नागरिक समाज (कुमार, रीमेई और गुप्ता 2017) का निर्माण करेगा।

13.3.3 वैश्वीकरण का मार्क्सवादी विवरण

मार्क्सवादी वैश्वीकरण के सार को वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था की स्थापना के रूप में चित्रित करते हैं। मार्क्सवादी के लिए, वैश्वीकरण वैश्विक अर्थव्यवस्था में 'कोर', 'सेमी पेरीफेरल' और 'परिधि' क्षेत्रों के बीच संरचनात्मक असंतुलन के संदर्भ में इम्मानुएल वालरस्टीन जैसे विश्व प्रणाली सिद्धांतकार द्वारा समझाया गया, अमीर और गरीबों के बीच एक असमान, श्रेणीबद्ध आदेश है। । उनके लिए वैश्वीकरण मौजूदा विश्व व्यवस्था को गहरा करता है, कॉर्पोरेट शक्ति की बढ़ती गतिविधियों के कारण लोकतांत्रिक जवाबदेही और लोकप्रिय जवाबदेही को कमजोर करता है। नव–मार्क्सवादी वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था में असमानताओं को उजागर करते हैं, जिसके माध्यम से विकसित देश संचालित होते हैं या कभी–कभी ट्रांसनेशनल कॉरपोरेशन (टीएनसी) के माध्यम से संचालित होते हैं या संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी विषम शक्तियों से जुड़े होते हैं, जो विकासशील देशों पर हावी होते हैं और उनका शोषण करते हैं (कुमार, रिमी और गुप्ता 2017) । सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति ने वैश्वीकरण के आर्थिक और राजनीतिक अर्थ को बदल दिया है। इससे राष्ट्र राज्यों के बीच और राष्ट्र के भीतर ही असंतुलन आ गया है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के सैद्धांतिक दृष्टिकोण की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.3.4 विश्ववादियों के प्रकार

वहाँ तीन प्रकार पाए जाते हैंः हाइपरग्लोबलिस्ट, ट्रांसफॉर्मलिस्ट्स और संशयवादियों के रूप में डेविड हेल्ड और एंथोनी मैकग्रा (2007) द्वारा पहचाना गया। इस प्रकार के प्रत्येक का लक्ष्य विभिन्न दृष्टिकोणों से वैश्वीकरण की विशिष्ट विशेषताओं की विशेषता है।

अतिविश्ववादी

अतिविश्ववादी, जैसे के. ओहमा, और आर. रीच (ओहमा, 1995) का मानना है कि ''वैश्विक अर्थव्यवस्था का मानवता और राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है; उनका तर्क है कि बाजार सीमा रहित है और अर्थव्यवस्था एकल, वैश्विक और एकीकृत है। कोई राष्ट्रीय उत्पाद या तकनीक नहीं होगी, कोई निगम नहीं होगा, कोई राष्ट्रीय उद्योग नहीं होगा। अब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था नहीं होगी'' (रॉबर्ट रीच, 1992)। वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम पर अतिविश्ववादियों का ध्यान दोनों, नवउदारवादी और मार्क्सवादी सिद्धांतकारों को शामिल करता है। अतिविश्ववादियों का तर्क है कि आर्थिक वैश्वीकरण उत्पादन, व्यापार और वित्त, एक सीमाहीन अर्थव्यवस्था के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की स्थापना के माध्यम से अर्थव्यवस्थाओं का अराष्ट्रीयकरण कर रहा है जिसमें वैश्विक पूंजी से ट्रांसमिशन बेल्ट की तुलना में राष्ट्रीय सरकारों को थोड़ा अधिक आरोपित किया जाता है। विशिष्ट स्थानीय संस्कृतियों और पारंपरिक मूल्यों के बजाय, वैश्वीकरण एक वैश्वीकृत समृद्ध, उच्च शिक्षित और ऊर्ध्वगामी मोबाइल क्षेत्र को बढ़ावा देता है, जो कि व्यक्तिवाद, उपभोक्तावाद, धर्मनिरपेक्षता और नव–उदारवादी पूंजीवाद पर एक प्रीमियम रखता है। अतिविश्ववादी भी कहते हैं कि एकल वैश्विक बाजार की वृद्धि और राज्यों के लिए अपनी आर्थिक नियति निर्धारित करने की क्षमता में कमी वैश्विक समकालीनकरण (कुमार, रिमी और गुप्ता 2017) की विशेषता वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। हाइपरग्लोबेलिस्ट एक प्रक्रिया के रूप में वैश्वीकरण की कल्पना करते हैं, जिसका आंतरिक तर्क और अनुमानित परिणाम है, वैश्विक समाज पूरी तरह से एकीकृत बाजार पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, सभी प्रकार की विषम संस्कृतियां, विशिष्ट रूप से उदार सांस्कृतिक ढांचे से प्राप्त बाजारों और संस्थानों के आधार पर, अद्वितीय सामाजिक पैटर्न के सामने वापस आती हैं। इस अर्थ में, ''इतिहास के अंत'' के बारे में एक प्रसिद्ध धारणा उत्पन्न होती है, जिसका तात्पर्य यह है कि राजनीतिक

ढांचे के रूप में उदार लोकतंत्र के साथ आधुनिक, वैश्विक पूंजीवाद सामाजिक–आर्थिक विकास के अंतिम शब्द (स्टेफेनोविक, 2008) का प्रतिनिधित्व करता है)। संक्षेप में, अतिविश्ववादी वैश्वीकरण को विश्व अर्थव्यवस्था के एकीकरण की एक अनोखी, वैध और प्रगतिशील प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

संशयवादी

पी. हर्स्टऔर जी. थॉम्प्सनजैसे संशयवादियों का सुझाव है कि ''वैश्वीकरण काफी हद तक एक मिथक है''। उनका मानना है कि मौजूदा वैश्वीकरण की सीमा अतिरंजित है और वैश्विक व्यापार की वृद्धि केवल प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्थाओं – यूरोप, एशिया–प्रशांत और उत्तरी अमेरिका में हुई है। "अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था वह है जिसमें राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के स्तर पर निर्धारित प्रक्रियाएँ अभी भी हावी हैं और अंतर्राष्ट्रीय घटनाएं ऐसे परिणाम हैं जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के विशिष्ट और विभेदक प्रदर्शन से निकलती हैं। ''अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय रूप से स्थित कार्यों का एक समुच्चय है'' (हर्स्ट एंड थॉम्पसन, 1999)। संशयवादियों का तर्क है कि समकालीन वैश्वीकरण न तो नया है और न ही क्रांतिकारी। वे केवल वैश्वीकरण के आर्थिक आयाम पर ध्यान केंद्रित करते हैं, यह तर्क देते हुए कि यह अंतरराज्यीय व्यापार के उच्च स्तर और यूरोपीय संघ (ईयू), और उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते (नाफ्टा) जैसे क्षेत्रीय आम बाजारों के विस्तार की सुविधा है जो वैश्विक आर्थिक एकीकरण को कम करते हैं । उनके विचार में, राज्य इन गतिविधियों में एक प्रमुख भूमिका बनाए रखते हैं, जिसमें वैश्विक आर्थिक प्रक्रियाओं को विनियमित करने और यहां तक कि अप्रकाशित करने की क्षमता भी शामिल है। सभी सरकारें वैश्विक अर्थव्यवस्था को विनियमित करने के लिए औपचारिक अधिकार बरकरार रखेंगी। संशयवादियों ने संदेह व्यक्त किया है, दोनों वैश्वीकरण के प्रभावों और इसकी सर्वव्यापकता के साथ–साथ एकीकरण प्रभाव की स्थिरता के संदर्भ में, जो इसे पैदा करता है(कुमार, रिमी और गुप्ता 2017)।

परिवर्तनकारी

तीसरे समूह को हेल्ड और मैकग्रे द्वारा परिवर्तनकारी के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें रोसेनौ या गिडेंस जैसे लेखक शामिल हैं। वे मानते हैं कि भूमंडलीकरण तेजी से आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों में एक आवश्यक भूमिका निभाता है जो आजकल विश्व व्यवस्था और आधुनिक समाजों का पुनर्गठन कर रहे हैं। ''वैश्वीकरण ने दुनिया भर के सामाजिक संबंधों और बातचीत के गहनता को दर्शाता है, जैसे कि दूर की घटनाओं को बहुत स्थानीयकृत प्रभाव प्राप्त होता है और इसके विपरीत'' (हेल्ड, मैकग्रे, 2007)। ''वैश्वीकरण स्थानीय, और यहां तक कि व्यक्तिगत, सामाजिक अनुभव के संदर्भों के परिवर्तन की चिंता करता है। हमारी दिन–प्रतिदिन की गतिविधियाँ दुनिया के दूसरी ओर होने वाली घटनाओं से प्रभावित होती हैं। इसके विपरीत, स्थानीय जीवनशैली की आदतें विश्व स्तर पर परिणामी हो गई हैं''।

परिवर्तनवादी (गिडेंस, शोल्टे, कैस्टेल, वालरस्टीन) वैश्वीकरण प्रक्रिया की सर्वव्यापकता और रैखिकता पर जोर देने के साथ–साथ इसके प्रभावों की प्रगतिवाद का आकलन करने के मामले में अधिक उदारवादी हैं। लेकिन वे वैश्वीकरण के बारे में संदेह के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते हैं। उनके लिए, समाज के संगठन में निर्विवाद रूप से मूलभूत परिवर्तन जो कि वैश्वीकरण लाता है, अंतरिक्ष और समय के ''संपीड़न'' के

माध्यम से सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के बढ़ते समग्र एकीकरण और त्वरण हैं। हालांकि, उनका दृष्टिकोण बहुआयामी है, जो आर्थिक लोगों के अलावा वैश्वीकरण के तंत्र को ध्यान में रखते हैं। इस अर्थ में, आधुनिकतावाद के एक समाजशास्त्री, एंथोनी गिडेंस (1990), ''आधुनिक'' पूंजीवादः राजनीति, सैन्य शक्ति और उद्योगवाद के बलों द्वारा आकार की एक घटना के रूप में वैश्वीकरण को मानते हैं। ये बल वैश्वीकरण के आयामों के स्रोत हैं।

परिवर्तनकारी के लिए, अंतर्राष्ट्रीय, उप–राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समूह और संगठन राज्य प्राधिकरण और पावर वेन के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हैं। और राज्यों की घटती क्षमता और क्षेत्र के कम महत्व के साथ, धर्म और जातीयता जैसे पहचान आधारित सुविधाओं की भूमिका वैश्विक राजनीति में बढ़ी और फैली है। संक्षेप में, परिवर्तनकारी परिणाम की दृष्टि से वैश्वीकरण की प्रक्रिया को असमान और अनिश्चित मानते हैं, जिससे इसकी बहुपरंपरा पर जोर पड़ता है।

13.4 वैश्वीकरण का आकलन

वैश्वीकरण को 1980 के दशक में आधुनिक दुनिया की सभी सामाजिक–आर्थिक बीमारियों के लिए रामबाण माना गया। इसके प्रचार के पीछे ट्रांसनैशनल कॉर्पोरेशन (टीएनसी) मुख्य बल थे। उन्होंने नव–उदारवादी शिक्षा के माध्यम से, तीसरी दुनिया को बताया कि 'आर्थिक विकास' का इंजन उदार वैश्विक बाजार में रहता है और परिणामी परिणाम गरीबी और असमानता (कुरियन) के लिए ऐसी सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए एक सक्षम वातावरण उत्पन्न करेगा। 2007)। उदारीकरण सफल भूमंडलीकरण के लिए एक उपकरण था, जो दो रूपों में दिखाई दिया। सबसे पहले, गैटशेड्यूल के अनुसार टैरिफ का उन्मूलन/कमी, स्वच्छता और फाइटो–सेनेटरी (एसपीएस) के माध्यम से गैर–टैरिफ अवरोधों का उन्मूलन/युक्तिकरण और डब्ल्यूटीओ के लिए व्यापार (टीबीटी) समझौतों के लिए तकनीकी बाधा, आयात और निर्यात प्रक्रियाओं का सरलीकरण। कई अंतरराष्ट्रीय समझौते। दूसरे शब्दों में, वैश्विक बाजार में पहुंच और संचालन पर प्रतिबंधों की कमी थी। दूसरे, विदेशी आर्थिक संबंधों से संबंधित घरेलू कानून में बदलाव किया गया, जैसे कि आयात और निर्यात के लिए कोटा खत्म करना, घरेलू बाजार में विदेशी पूंजी पर प्रतिबंध को हटाना। परिणामस्वरूप, विकासशील देशों में श्रम–गहन, पर्यावरण–प्रदूषित उद्योगों को स्थानांतरित किया जाने लगा। इसके अलावा, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने स्थानिक पृथक्करण प्रक्रिया (जैसे कि पूंजी–गहन और ऊर्जा गहन प्रक्रियाएं) और उत्पादन के कारकों के मूल्यों के अनुसार व्यक्तिगत चरणों की नियुक्ति के अवसर पैदा किए। उसी समय, बेहतर परिवहन और संचार ने इन बिखरी हुई प्रस्तुतियों को अपेक्षाकृत मामूली लागत (ओ'रॉकरे, विलियम्सन, 1999) में सहभागिता की अनुमति दी। उपर्युक्त सभी कारकों के परिणामस्वरूप, उत्पादन को आज वास्तव में वैश्विक चरित्र प्राप्त हुआ। हम कह सकते हैं कि आज की दुनिया अन्योन्याश्रित और परस्पर जुड़ी हुई हैय क्योंकि एक देश की बहुत अच्छी तरह से अन्य देशों के साथ सहयोग पर निर्भर करता है। 1950–1960 के दशक में, प्रत्येक कंपनी ने राष्ट्रीय सीमाओं द्वारा सीमित बाजार में काम किया। हालांकि, आज राष्ट्रीय सीमाओं के पार माल और सेवाओं की आवाजाही पर प्रतिबंध कम हो गया है और विश्व बाजार के अंतर्राष्ट्रीय निर्माता काफी आसानी से आगे बढ़ सकते हैं।

विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) जैसे बहुपक्षीय संस्थानों को तीसरी दुनिया को 'वैश्वीकरण' की परियोजना में प्रवेश करने वाली एजेंसियों के रूप में देखा गया। पूरी दुनिया में टीएनसीकी लचीली और मुक्त गतिशीलता को सुगम बनाने के लिए नव–उदारवादी ताकतों द्वारा वैध और इंजीनियर बाजार संचालित कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय राजनीतिक सीमाओं को पार करते हुए वाशिंगटन सर्वसम्मति 'का आगमन हुआ।

13.4.1 वैश्वीकरण के प्रतिकूल प्रभाव

अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज और पर्यावरण सभी वैश्वीकरण के प्रभाव से प्रभावित थे।

13.4.1.1 आर्थिक प्रभाव

'गरीबी और असमानता में वृद्धिः

दूसरे विश्व–युद्ध के बाद से गरीबी और असमानता के मुद्दे को दूर करने के लिए कई बहुपक्षीय और बहुपक्षीय संगठन/कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीटीएडी), न्यू इंटरनेशनल इकोनॉमिक ऑर्डर (एनआईईओ), सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (एमडीजी) आदि दुनिया में गरीबीकम करने के यूटोपियन मामलों का लगातार पीछा करने के लगातार प्रयास हैं। इन सभी प्रयासों के बावजूद, कोई केवल गरीबी और बढ़ती असमानता के बीच में हैव्स और नो–नॉट्स, अंतर–राष्ट्रीय और अंतर–राष्ट्रीय रूप से नोटिस कर सकता है। वैश्वीकरण ने केवल इन विकृतियों को स्वीकार किया है (कुरियन, 2007)। चीन और भारत को छोड़कर अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों में, नव–उदारवादी वैश्वीकरण के तहत व्यापक आर्थिक प्रदर्शन विनाशकारी था। इन देशों में भी, हालांकि राष्ट्रीय आय में उल्लेखनीय प्रगति, बेरोजगारी, और अमीरों और गरीबों के बीच असमानता का विस्तार हुआ, जिससे वैश्वीकरण विशाल आबादी के लिए काम करने में असमर्थ हो गया। किसानों की आत्महत्या, गरीबी से मौतें और सामाजिक समर्थन प्रणाली का टूटना भारत सहित सभी तीसरी दुनिया के देशों में व्याप्त है। अर्थशास्त्रियों ने पिछले 6 दशकों के वैश्वीकरण का विश्लेषण किया है और पाया है कि दुनिया के उन्नत औद्योगिक देशों, जैसे कि यूएस और ईयू ने लाभ का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त किया और सबसे गरीब देश वास्तव में खराब हो गए हैं (स्टिग्लिट्ज, 2008)। उभरती हुई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को अक्सर कैसिनो अर्थव्यवस्था कहा जाता है, जहां मुख्य लेनदेन पैसे और वित्त प्रति सेगमेंट में होते हैं, और इसका वास्तविक अर्थव्यवस्था से कोई लेना–देना नहीं होता है। यह पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को बहुत अस्थिर बनाता है। 1997–98 पूर्वी एशियाई मौद्रिक संकट को एक उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। तृतीय विश्व के अधिकांश देश अब 'ऋण जाल' में हैं।

श्रम एवं बेरोजगारीः

जबकि वैश्वीकरण 'पूंजी' के लिए बहुत अनुकूल है, यह श्रम के लिए अनुकूल नहीं है। उत्पादन के एक परिवर्तनशील कारक के रूप में श्रम को डाउनग्रेड किया जाता है। किराया और आग, मानदंड बन गए हैं और विकसित देशों से बड़ी पेंशन और अन्य सार्वजनिक/निजी निधियों द्वारा निवेश विकासशील देशों में आराम से श्रम कानूनों पर निर्भर हैं। प्रौद्योगिकी में उन्नति भी नौकरियों के नुकसान को कम कर रही है। अधिकांश आधुनिक विनिर्माण संयंत्र श्रम कल्याण की तुलना में स्वचालन पर अधिक

निवेश करते हैं। केवल अत्यधिक कुशल प्रबंधकीय सफेद कॉलर नौकरियां नीले कॉलर वाले की जगह ले रही हैं। श्रम औद्योगिक क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहा है, जबकि वैश्विक पूंजी उड़ान–से अधिक सुगम श्रम भूगोल के लिए रवाना हो रही है और वैश्विक स्तर पर शोषण के मॉडल की नकल करना इस दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा है।

13.4.1.2 राजनीतिक प्रभाव

वैश्वीकरण के साथ विद्वानों को जो दूसरा प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, वह राजनीतिक है और वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की अन्योन्याश्रयता के कारण संभावित क्षेत्रीय या वैश्विक अस्थिरता से संबंधित है। यह भी एक लॉन में सभी फूलों से एक तितली नालियों के रूप में तितली प्रभाव के रूप में कहा जाता है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्र–राज्य अन्य देशों की गतिविधियों और पड़ोसी राज्यों में सरकारों के निर्णयों पर निर्भर हैं। (माइकल 2005)। किसी देश में स्थानीय आर्थिक उतार–चढ़ाव या संकट के क्षेत्रीय या वैश्विक प्रभाव हो सकते हैं। नव–उदारवादी वैश्वीकरण में–नव–रूढ़िवाद '(नियोकॉन्स) में एक राजनीतिक जुड़वां है। अमेरिका इसके संरक्षक होने का दावा करता है। नव–विपक्ष लोकतंत्र 'के अपने संस्करण के लिए तर्क देते हैं। यदि कोई राज्य इसमें सफल नहीं होता है, तो वे इसे एक 'दुष्ट राज्य' के रूप में ब्रांड कर सकते हैं; इराक पर हमला एक ऐसा मामला है और उत्तर कोरिया और ईरान में शासन लगातार खतरे में है। नव–उदारवाद और नव–रूढ़िवाद के तहत राष्ट्रीय राजनीति को छेड़ा जाता है और अमेरिकी दिक्कों को उपकृत करने के लिए वातानुकूलित किया जाता है। बदले हुए राजनीतिक परिदृश्य में, तीसरी दुनिया की सरकारों को अक्सर वैश्विक पूंजी हितों के प्रति जवाबदेह बनाया जाता है, न कि उन लोगों के हितों के प्रति, जिन्होंने उन्हें अपने हितों की रक्षा करने की शक्ति दी है (कुरियन 2007)।

13.4.1.3 सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

वैश्वीकरण ने मूर्त मानकों और सांस्कृतिक विचारों के अभूतपूर्व सामंजस्य को उजागर किया है। विविधता को एक उन्मूलन के रूप में देखा जाता है, और अकेले एक क्षणिक उत्सव के योग्य। एक वैश्विक बाजार और वर्तमान पूंजीवादी वैश्वीकरण का मुख्य लक्ष्य स्पष्ट रूप से धन का तेजी से संचय हो गया है। भौतिक सफलता जीवन का अंतिम लक्ष्य बन गई है और एक व्यक्ति (कुरियन 2007) के सामान्य पाठ्यक्रम के रूप में है। वैश्वीकरण ने 'समुदाय' और एक व्यक्ति को गंभीर रूप से प्रभावित किया है और उसकी/उसकी स्वतंत्रता तर्कसंगत विकल्प की एक वेदी बन गई है। स्वार्थ और हिंसा जैसे मूल्य मानवीय मूल्यों को विस्थापित कर रहे हैं। वैश्वीकरण की आड़ में अनैतिकता प्रजनन कर रही है।

13.4.1.4 पर्यावरण असंतुलन

वैश्वीकरण का एक गंभीर खतरा पर्यावरण पर है। पृथ्वी के जीवन में तेजी से हो रहे मौसम संबंधी परिवर्तनों से 'हमारा सामान्य भविष्य' खतरे में है। वैश्वीकरण टीएनसीको सक्षम बनाता है और अक्सर पर्यावरण की कीमत पर धन का उत्पादन करने के लिए बड़े देशों द्वारा समर्थित होता है। इस तरह से वैश्वीकरण के भविष्य के लिए गंभीर परिणाम होने की संभावना है।

वर्तमान वैश्वीकरण, जितना शक्तिशाली दिखाई दे सकता है, उतना ही अस्थिर है। यह एक ओर समाज और प्रकृति की रक्षा करने में असमर्थ है, और दूसरी ओर अपने स्वयं के बाजारों की संभावित अराजकता से पूंजी की रक्षा करने में असमर्थ है। क्या एक वैकल्पिक वैश्वीकरण संभव है?

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के प्रभावों का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 वैश्वीकरण के विकल्प

वैश्वीकरण के विकल्पों की तलाश में, मैथ्यू कुरियन (2007) ने दो सिंडोमों, अर्थात् टीना और टीएएमए सिंडोमों का उल्लेख किया। कोई विकल्प नहीं है (टीना), वैश्वीकरण के रक्षक यह मानते हैं कि वैश्वीकरण का कोई सैद्धांतिक और व्यावहारिक विकल्प नहीं है। दूसरी ओर, कई विकल्प हैं (टीएएमए) स्कूल एक विविध सैद्धांतिक और साथ ही पूंजीवादी वैश्वीकरण के लिए व्यावहारिक विकल्प सुझाता है।

13.5.1 सैद्धांतिक दृष्टिकोणः

वैश्वीकरण के लिए विकल्पों का सैद्धांतिक निर्माण शुरू करने के लिए हम कार्ल पोलानी की (1957) अवधारणा को 'अंतर्निहित' कर सकते हैं। उनका तर्क है, प्रागैतिहासिक पूंजीवाद के तहत, अर्थव्यवस्था समाज में अंतर्निहित थी, इसलिए सामाजिक नियमों और प्रथाओं ने आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित किया। इस चरण में, धर्म और नैतिकता ने अर्थव्यवस्था पर जबरदस्त प्रभाव डाला। लेकिन जब 18 वीं शताब्दी में पूंजीवाद का उदय हुआ, तो अर्थव्यवस्था समाज से दूर हो गई। पूंजीवादी इस समय के शास्त्रीय और नव–शास्त्रीय स्कूलों के राजनीतिक अर्थशास्त्रियों का दावा करते थे कि एक मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था सहज रूप से 'बुनियादी आर्थिक समस्या' को सबसे कुशलता से हल करेगी। तथाकथित अदृश्य हाथ 'या' बाजार तंत्र 'ने इस प्रसार–सक्षमता को सक्षम किया। बाजार के कानूनों, मुख्य रूप से मांग के कानून और आपूर्ति के कानून द्वारा आर्थिक निर्णय लिए गए।

वैश्वीकरण पूंजीवाद के लिए अधिक गंभीर सैद्धांतिक चुनौती अर्थशास्त्रियों ने कार्ल मार्क्स, जे.एम. केन्स और कई अन्य लोगों द्वारा प्रस्तुत की थी। मार्क्स ने कहा कि सर्वहारा वर्ग द्वारा संचालित राज्य कुशल आर्थिक प्रशासन के लिए सबसे अच्छी एजेंसी होगी। बाद में, लेनिन ने संसाधनों के कुशल आवंटन और कुल उपज के वितरण के लिए एक वैकल्पिक तंत्र के रूप में आर्थिक नियोजन की शुरुआत की

(कुरियन, 2007)। महान मंदी की पृष्ठभूमि में, जे.एम. कीन्स ने स्थिर विकास पथ के माध्यम से अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए 'राजकोषीय इंजीनियरिंग' के साथ अर्थव्यवस्था में राज्य की भागीदारी को प्रमाणित किया। जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में तीसरी दुनिया का गठन किया गया था, तो सरकार को सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए सामाजिक और आर्थिक एजेंसी की भूमिका सौंपी गई थी और विकास योजना को इसे प्राप्त करने के साधन के रूप में निर्धारित किया गया था। लेकिन 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में दुनिया के सभी हिस्सों में 'राज्य की विफलताएं' थीं।

13.5.2 व्यावहारिक विकल्प

विद्वानों द्वारा चर्चा किए जाने वाले कई व्यावहारिक विकल्प हैं:

आत्म निर्भरता को बढ़ावा:

अर्थव्यवस्था को विभिन्न स्तरों पर देखा जा सकता है, परिवारसे गांव तक, राज्य से राष्ट्र तकआदि प्रत्येक स्तर पर, सापेक्ष आत्मनिर्भरता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, परिवार को अपने उत्पादक संसाधनों को इस तरह से नियोजित करना है जैसे कि अपनी 'जरूरतों' को पूरा करने के लिए सामान प्रदान करना है। सदस्यों और सहभागी निर्णय लेने के सहकारी प्रयास बहुत महत्वपूर्ण हैं। परिवार में महिला को पुरुष सदस्यों के बराबर दर्जा दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार, ग्रामीण स्तर पर लोगों को जो कुछ भी आवश्यक होता है, उसे उसके भौगोलिक इलाके के भीतर जितना संभव हो उतना उत्पादन किया जाना चाहिए। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विदेशी सहायता और उधार पर निर्भरता को समाप्त करना बेहतर होगा। विदेशी ऋण साम्राज्यवादी वैश्वीकरण की सुविधा के लिए एक जाल है (कुरियन, 2007)।

'बुरे' और 'उपभोक्तावाद'से बचना:

टीएनसी वैश्वीकरण के मुख्य लाभार्थी हैं। विभिन्न तरीकों से वे अपने बाजार को बनाए रखने के लिए संभावित उपभोक्ताओं को पालतू बनाते हैं। टीएनसीके अधिकांश उत्पाद आम लोगों के लिए आवश्यक नहीं हो सकते हैं, लेकिन 'उपभोक्तावाद' के कारण वे इन सभी को खरीदने के लिए मजबूर हैं। उपभोक्तावाद लोगों को ऋणग्रस्त करने और यहां तक कि आत्महत्या के लिए प्रेरित कर रहा है।

आईटी द्वारा 'समुदायों'का पुनर्निर्माण:

वैश्वीकरण 'समुदाय' का विखंडन करता है। लेकिन वैश्वीकरण के माध्यम से विकसित मीडिया को प्रभावी ढंग से समुदाय को फिर से बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। मीडिया की भूमिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इसलिए मीडिया को निष्पक्ष और अधिक खुला होना चाहिए। मीडिया आजकल उपभोक्तावादी ताकतों द्वारा संचालित है, न कि सभी नागरिकों द्वारा। दुनिया भर के लोगों को यह पहचानने में मदद नहीं की जा रही है कि सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे – भीड़भाड़ वाले शहर, नए संक्रमणों का त्वरित प्रसार, ग्लोबल वार्मिंग, दुनिया भर में असमानता का विकास, पर्यावरण का विनाश – ये सभी वैश्वीकरण नामक एक ही वैश्विक प्रक्रिया का हिस्सा हैं। लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि ये मुद्दे सिर्फ घटित नहीं होते हैं, बल्कि ये सभी संबंधित हैं (कैवनघ, मंडेर, 2004)।

क. विकेंद्रीकृत योजनाः

विकेंद्रीकृत राजनीति को सही ढंग से संचालित करना और नियोजन वैश्वीकरण से लड़ने के लिए एक संभावित हथियार हो सकता है। ग्रासरूट सामाजिक और आर्थिक संस्थान जैसे स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) आदि लोगों को वैश्वीकरण को रोकने के लिए सक्षम कर सकते हैं (कुरियन, 2007)। राज्यों को पहले अधिक स्थानीय उन्मुख होना चाहिए और पहले राष्ट्रीय समस्याओं को हल करना चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें वैश्विक मुद्दों पर तुरंत प्रतिक्रिया करने में सक्षम होना चाहिए, क्योंकि राज्यों को वैश्विक शासन का निर्धारण करने में आवश्यक अभिनेता होना जारी है। व्यवसाय की दुनिया में भी यही बात लागू होती है, वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफल होने के लिए, कंपनियों को ''विश्व स्तर पर सोचने और स्थानीय स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है''। अभ्यास से पता चलता है कि व्यवसाय जो संकीर्ण स्थानीय आवश्यकताओं के लिए विश्व स्तर पर डिजाइन करने में सक्षम हैं और जो ''आपकी दृष्टि को व्यापक बनाते हैं, फिर भी आपका ध्यान संकीर्ण करते हैं'' विकास और सफलता उत्पन्न करेंगे (पिंटो, 2004)। वैश्वीकरण का विचार है कि ''बड़ा बेहतर है'' गलत है। इसमें स्थानीय मुद्दों के साथ चिंता का अभाव और स्थानीयता पर हावी होना शामिल है। इस एजेंडे के संबंध में ग्लोकलाइजेशन की अवधारणा शुरू की गई है। यह 1980 के दशक के दौरान व्यापार शब्दजाल का एक पहलू बन गया, जो जापान से निकलता है, जहां विशेष और सार्वभौमिक के बीच संबंधों के सामान्य मुद्दे ने ऐतिहासिक रूप से लगभग ध्यान आकर्षित किया है (मियोशी और हारोटुनियन, 1989)। वैश्वीकरण एक दोहरी प्रक्रिया है – सबसे पहले, संस्थागत और विनियामक गतिविधियाँ राष्ट्रीय दायरे से ऊपर की ओर क्षेत्रीय या वैश्विक दायरे में और नीचे से व्यक्तिगत या स्थानीय के दायरे में चलती हैं। दूसरे, आर्थिक गतिविधियाँ और अंतर–फर्म नेटवर्क एक ही समय में परिवर्तित हो रहे हैं ताकि अधिक स्थानीयकृत और ट्रांसनैशनल बन सकें (स्वीनगेडोऊ, 2004)।

ख. बेहतर सहभागिता एवं समन्वयः

वैश्वीकरण और विश्व व्यापार के लाभों के रूप में अधिक संतुलन रखने के लिए, वैश्वीकरण को अधिक विनियमित किया जाना चाहिए और देशों को बेहतर सहयोग करना चाहिए। विकसित और विकासशील देशों को सहकारी रूप से कार्य करना होगा, ताकि गरीब और अमीर के बीच की खाई हर साल अधिक से अधिक चौड़ी न हो, लेकिन इसे संकीर्ण करना शुरू करना होगा। हालांकि, प्रभावी रूप से ऐसा करने के लिए कोई संस्थाएं, विशेष रूप से लोकतांत्रिक संस्थान नहीं हैं। वैश्वीकरण को अधिक प्रबंधनीय बनाने के लिए और इसे एकजुटता के सिद्धांतों के आधार पर लेने के लिए, संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका को सुधारना और मजबूत करना महत्वपूर्ण है। । यह कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा सुझाया गया है कि गैर–सरकारी संगठनों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के संबंधों में सुधार (सुधार वैश्वीकरणः वेब) के लिए एक उदाहरण हो सकता है। बॉब डेकोन और उनके सहयोगियों (1997) के काम का मानना है कि वैश्विक कल्याण के सामाजिक कल्याण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को सबसे पहले सुपरनैशनल संस्थानों के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है और इस लक्ष्य के लिए योगदान देने वाली कई बहुराष्ट्रीय एजेंसियों के काम पर चर्चा की जा सकती है। उनका तर्क है कि इन संगठनों को 'वैश्विक सरकार सुधार

एजेंडा' के रूप में वर्णित करने के लिए उन्हें लागू करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए सहकारी प्रयासों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को भी उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए सुझावों के लिए इकाई के अंत में देखें।

1. वैश्वीकरण के वैकल्पिक दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

13.6 सारांश

वैश्वीकरण ने विकसित और विकसित काउंटी के लिए नए अवसरों को लाया है। यह शीत युद्ध के बाद से वैश्विक राजनीति में अग्रणी प्रक्रिया है, जो परिवर्तन और निरंतरता को दर्शाता है। लेकिन वैश्वीकरण ने नई चुनौतियों को भी पार कर दिया है जैसे कि असमानता बढ़ रही है और राष्ट्रों के भीतर, वित्तीय बाजार में अस्थिरता और पर्यावरणीय गिरावट। वैश्वीकरण दुनिया के लोगों के लिए भारी लाभ का वादा करता है। इस वादे को वास्तविकता बनाने के लिए, हमें प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करने का एक तरीका खोजना चाहिए। नकारात्मक प्रभावों को कम करने और यह सुनिश्चित करने के लिए बेहतर ध्यान दिया जाना चाहिए कि लाभ व्यापक रूप से और काफी वितरित किए गए हैं।

विद्वानों को लगता है कि वैश्वीकरण के वैकल्पिक रूपों पर विचार करना आवश्यक है, ऐसे रूप जो पूंजीवाद के कुछ सकारात्मक परिणामों को बनाए रख सकते हैं (जहां तक वे पूंजीवाद के बाहर मौजूद हो सकते हैं) एक नए चरण में संक्रमण में एक सामाजिक–आर्थिक प्रणाली के रूप में इसे पार करते हुए। विश्व इतिहास का। बेशक, ऐतिहासिक रूप से पूंजीवाद के कई विकल्प हैं और आज भी इसके कई विकल्प हैं, लेकिन उनमें से कोई भी बहुत लोकप्रिय नहीं है। वैकल्पिक वैश्वीकरण की मुख्य आवश्यकताएं सभी देशों, लोगों और देशों के लिए समानता हैं, साथ ही साथ मजबूत लोकतांत्रिक अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की मदद से दुनिया के विकास के विशिष्ट क्षेत्रों का विनियमन भी है। इससे पता चलता है कि दुनिया के सतत विकास के लिए एक वैकल्पिक वैश्वीकरण आवश्यक है, और यदि दुनिया भर में सही कदम और प्रयास किए जाते हैं, तो वर्तमान वैश्वीकरण का एक विकल्प लागू करना संभव होगा। ऊपर वर्णित वैकल्पिक वैश्वीकरण सभी संकटों, विफलताओं और विचलन के बावजूद एकल वैश्विक समान और समृद्ध क्षेत्र के देशों और लोगों को एक साथ लाएगा, जो सभी के हित में है।

13.7 संदर्भ ग्रंथ

भगवती, जगदीश (2004), *इन डिफेंस ऑफ ग्लोबलाइजेशन,* न्यू डेल्ही : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

कार्डोसो, एफ. एच. एण्ड फालेटो, ई. (1979), *डिपेंडेंसी एण्ड डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* बर्केले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1967), *कैपिटलिज्म एण्ड अण्डरडेवपलपमेंट इन लैटिन अमेरिका,* न्यू यॉक : मन्थली रिव्यू प्रेस।

फ्रैंक, ए.जी. (1975), *ऑन कैपिटलिस्ट अण्डरडेवलपमेंट,* न्यू यॉर्क : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी रिव्यू प्रेस।

गिल्पिन, रॉबर्ट (2003), *दि चैलेंजेज ऑफ ग्लोबल कैपिटलिज्म,* प्रिंसटन : प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

स्टेगेर, मैनफ्रेड बी. (2017), *ग्लोबलाइजेशन : ए वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन,* यूके : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

वाल्ट्ज, कैनेथ (1999), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड गवर्नेंस'', इन *पीएस : पॉलिटिकल साइंस एण्ड पॉलिटिक्स,* वॉल्यूम, नं.4 : 693–700

13.8 अपनी प्रगति की जांच करेंअभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

- आपके उत्तर में 1492 से लेकर आज तक की वैश्वीकरण की परिभाषाएं और इसके तीनों चरणशामिल होने चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

- वैश्वीकरण के यथार्थवादी, उदारवादी और मार्क्सवादी विवरण को शामिल करें

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

- आपके उत्तर में विभिन्न क्षेत्रों यानी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभावों को शामिल होना चाहिए

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

- वैश्वीकरण के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण शामिल करें

संदर्भ ग्रंथ

1. कैवेनाह, जे. एण्ड जे. मेण्डर (2004), *अल्टरनेटिव टू इकोनॉमी ग्लोबलाइजेशन : ए बेटर वर्ल्ड इज पॉस्सिबल,* बेर्रेट–कोहलेर।
2. डीकोन, बी., हुल्से, एम. एण्ड स्टब्ब्स, पी. (1997), *ग्लोबल सोशल पॉलिसी : इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन एण्ड दि फ्यूचर ऑफ वेल्फेयर,* लन्दन : सेज पब्लिकेशंस।
3. इवान्स, पीटर (2008), इज ऐन अल्टरनेटिव ग्लोबलाइजेशन पॉस्सिबल? *पॉलिटिक्स सोसाइटी,* 36 : 271–298, देखें – http://pas.sagepub.com/cgi/content/abstract/36/2/271 [Accessed 23 September 2018]
4. फ्राइडमैन, थॉमस एल. (2005), *दि वर्ल्ड इज फ्लैट : ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ दि ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी,* न्यू यॉर्क : फर्रार : स्टॉस एण्ड गिरॉक्स।
5. गिड्डेन्स, एन्थॉनी (1990), *दि कंसीक्वेंसेज ऑफ मॉडर्निटी,* कैम्ब्रिज : पॉलिटी प्रेस।
6. हेल्ड, डेविड एण्ड, मैकग्रेव ए., (2002), *ग्लोबलाइजेशन ऐंटी ग्लोबलाइजेशन,* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. हेल्ड, डेविड एण्ड, मैकग्रेव ए., (2002), *ग्लोबलाइजेशन थियरी : ऐप्रोचेज एण्ड कंट्रोवर्सीज,* पॉलिटी।
8. हर्स्ट, पॉल एण्ड ग्राहामे थॉम्पसन (1999), *ग्लोबलाइजेशन इन क्वेश्चन,* पॉलिटी प्रेस।
9. के.एच. ओ रॉकरे एण्ड जे. जी. विलियमसन (1999), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड हिस्ट्री : दि इवॉल्यूशन ऑफ ए नाइनटींथ सेंचुरी ऐटलांटिक इकोनॉमी,* ऐकोर्न ग्राफिक्स सर्विसेज।
10. कुमार चंचल, लुंगिथियांग रियामी एण्ड संजू गुप्ता (2017), *अण्डरस्टैण्डिंग ग्लोबल पॉलिटिक्स,* न्यू डेल्ही : केडब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा0 लि0।
11. कुरिआन, वी. मैथ्यू (2007), ''अल्टरनेटिव्स टू ग्लोबलाइजेशन : ए सर्च इन *मेंन्स्ट्रीम,* वॉल्यूम–एक्सएलवी, नं.35, सैचर्डे 18 अगस्त, 2007 https://www.mainstreamweekly. net/article287.html
12. Leslie Sklair, 2008. *The Emancipatory Potential of Generic Globalisation*, The Berkeley Electronic Press Available at:
13. लेस्ली स्कलायेर, (2008), *दि इमैनिसिपेट्री पोटेंशियल ऑफ जेनेरिक ग्लोबलाइजेशन,* दि बर्केले इलेक्ट्रॉनिक प्रेस, देखें – http://www.informaworld.com/smpp/content~content= a918201775&db=all [Accessed 23 October 2018]
14. मैकग्रेव, ऐन्थॅनी (2008), ''ग्लोबलाइजेशन एण्ड ग्लोबल पॉलिटिक्स'' इन जॉन बेलिस, ऐट आल., *दि ग्लोबलाइजेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

15. मैकलुहान, एम. (1962), *दि गुटेनबर्ग गैलेक्सी : दि मेकिंग दि टाइपोग्राफी मैन,* टोरोंटो : यूनिवर्सिटी ऑफ टोरोंटो प्रेस।

16. मिडग्ले, जेम्स (2007), ''पर्सपैक्टिव ऑन ग्लोबलाइजेशन, सोशल जस्टिस एण्ड वेल्फेयर'' इन *दि जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एण्ड सोशल वेल्फेयर,* वॉल्यूम–34, इश्यू–2, जून स्पेशल इश्यू ऑन ग्लोबलाइजेशन, सोशल जस्टिस एण्ड सोशल वेल्फेयर,
https://scholarworks.wmich.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=3247&context=jssw

17. मिट्टलमैन, जेम्स (2006), *ग्लोबलाइजेशन एण्ड इट्स क्रिटिक्स इन : स्टब्स, रिचर्ड एण्ड जियेफ्रे अण्डरहिल, पॉलिटिकल इकोनॉमी एण्ड दि चेंजिंग ग्लोबल ऑर्डर,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

18. मियोशी, मसाओ एण्ड हैरी डी. हरूट्यूनियन (1989), *पोस्टमॉर्डनिज़्म इन जापान,* ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस।

19. ओहमी, केनिची (1995), *दि ऐण्ड ऑफ दि नेशन–स्टेट : दि राइज ऑफ रिजनल इकोनॉमिक्स,* न्यू यॉर्क : सिमोन एण्ड शस्टर आईएनसी.

20. पिंटो, जिम (2004), *थिंक ग्लोबलिटी एक्ट लोकली,* ऑटोमेशन वर्ल्ड।

21. पोलानयी (1957), *दि ग्रेट ट्रांस्फॉर्मेशन,* न्यू यॉर्क : बीकेन।

22. रीच, रॉबर्ट (1992), *दि वर्क ऑफ नेशंस : प्रिपेयरिंग अवरसेल्व्स फॉर ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी कैपिटलिज़्म,* विंटेज बुक्स।

23. रॉबर्टसन, आर. (1992), ग्लोबलाइजेशन : सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल कल्चर, थाउजैण्ड ऑक्स : सेज पब्लिकेशंस।

24. रॉबर्टसन, रोनाल्ड (1992), ग्लोबलाइजेशन : सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल कल्चर, लन्दन, सेज।

25. शॉल्टे, जे. ए. (2000), *ग्लोबलाइजेशन : ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन,* न्यू यॉर्क : पालग्रेव।

26. शॉल्टे, जैन आर्ट (2005), *ग्लोबलाइजेशन : ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन,* लंदन : पालग्रेव।

27. स्टेफैनोवी, जोरान (2008), *ग्लोबलाइजेशन : थियरिटिकल पर्सपेक्टिव्ज, इम्पैक्ट्स एण्ड इंस्टीच्यूशनल रिसपोंस ऑफ दि इकोनॉमी,* http://facta.junis.ni.ac.rs/eao/eao200803/eao 200803-09.pdf, [Accessed on 30 September, 2018].

28. स्टिग्लिट्ज, जे.ई. (2008), मेकिंग ग्लोबलाइजेशन वर्क, इन *दि इकोनॉमिक एण्ड सोशल रिव्यू,* कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, यूएसए, 39 (3)

29. स्वयगेडॉव, ऐरिक (2004), ग्लोबलाइजेशन ऑर ग्लोकलाइजेशन? नेटवर्क्स, टेरिटरीज एण्ड रिस्केलिंग, इन *कैम्ब्रिज रिव्यू ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स,* 17 (1) : 25–44

30. *दि अल्टर्नेटिव ग्लोबलाइजेशन :*
https://www.ukessays.com/essays/international-relations/the-alternative-globalisation.php, [Accessed 23 September 2018].

31. वालर्स्टीन, आई. (1980), *दि कैपिटलिस्ट वर्ल्ड इकोनॉमी,* न्यू यॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

32. वालर्स्टीन, इम्मेनुएल (2004), *वर्ल्ड सिस्टम एनालाइसिस : एन इंट्रोडक्शन,* डुर्हान : ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस।

33. जुर्न, माइकेल (2005), *फ्रॉक इंटरडिपेंडेंस टू ग्लोबलाइजेशन, हैण्डबुक चह इंटरनेशनल रिलेशंस, लंदन : सेज पब्लिकेशंस*

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY